नाम- डॉ० सुजाता गुप्ता
विभाग - हिंदी
वर्ग - स्नातक प्रथम वर्ष
पत्र - I

शीर्षक :- प्रगतिवाद की प्रवृत्तियां
दिनांक - 21.05.2020
व्याख्यान क्रम सं - 2

(2) शोषण का विरोध ⇒

प्रगतिवाद के अनुसार पूँजीवादी व्यवस्था का मुलाधार है शोषण। वह भाँति-भाँति से आर्थिक शोषण करता है। कारखानों में मजदूरों का, गाँवों में किसानों का दैनिक जीवन, में निम्नवर्ग का और निम्नजातियों का शोषण होता है। प्रगतिवाद किसी भी प्रकार के शोषण का विरोधी है। आर्थिक विषमता पर व्यंग्य करते हुए दिनकर ने लिखा है —

श्वानों को मिलता दूधवस्त्र, भूखे बालक अकुलाते हैं
माँ की हड्डी से चिपक ठिठुर जाड़े की रात बिताते हैं।
युवती की लज्जा-वसन बेच जब ब्याज चुकाये जाते हैं।
मालिक जब तेल-फुलेलों पर पानी सा द्रव्य बहाते हैं;
पापी महलों का अहंकार, देता मुझको तब आमंत्रण है

(3) सामान्य जन-जीवन में रुचि :—

प्रगतिवाद ने जीवनी-शक्ति का स्त्रोत अभिजात्य की नहीं वरन् जन-जीवन को माना है। मजदूर तथा किसान आदि के जीवन को माना है। उस वर्ग के जीवन को माना है जिसे साहित्य में अब तक महत्ता मिली थी। प्रगतिवादी कवियों ने मजदूरों, किसानों के दुख दर्द को पहचानने तथा उसे वाणी

Scanned with CamScanner

(4) निम्नवर्ग की दुर्दशा का वर्णन :

निम्नवर्ग अर्थात् दीनहीन वर्ग को जिस प्रकार का जीवन जीना पड़ता है, प्रगतिवादी कवियों ने उसका भी वर्णन किया है। अंध-विश्वासों, कुरीतियों तथा अर्थव्यवस्था ने उन्हें जिन दयनीय स्थितियों में पहुँचा दिया उसका वर्णन प्रगतिवादी कवियों ने किया है।

ग्रामीण पाठशाला की दयनीय शिक्षा दीक्षा का चित्रण नागार्जुन ने इन शब्दों में किया है —

घुन खाये शहतीरों पर की बारह खड़ी बाँचे
फटी भीत है, छत चूती है, आले पर विस्तुइया नाचे
बरसाकर बेबस बच्चों पर मिनट-मिनट पर पाँच तमाचे।
इसी तरह से दुखरन मास्टर गढ़ता है आदम के साँचे

(5) व्यंग्य की प्रधानता →

प्रगतिवादी कवियों ने प्राचीन शक्तियों के विकृत रूपों, नित्य नये षड्यन्त्रों पर विविध प्रकार से व्यंग्य किया है। इसमें उनका उद्देश्य नई जीवंत शक्ति की पुरानी युक्तियों की आवश्यकता के प्रति सजग करना। पंत की इन पंक्तियों में इस भाव की अभिव्यक्ति हुई है :—

राम-राम हे ग्राम देवता यथा नाम
शिक्षक हो तुम, मैं शिष्य, तुम्हें सविनय प्रणाम
विजया, महुआ, ताड़ी, गाँजा पी सुबह शाम
तुम समाधिस्थ नित रहो, तुम्हें जग से न काम।

(6) रस परिवर्तन :-
प्रगतिवाद ने छायावादी युग की इस पुनरुक्ति (श्रृंगार) का परित्याग कर विशेष रूप से वीर-रस को स्थापित किया। कवियों ने वीर के माध्यम से ही जन-जागरण का स्वर बुलन्द किया।
उदाहरणार्थ निराला की ये पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं :-

अबे सुनबे गुलाब
भूल मत, गर पाई खुशबू रंगो आब,
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट
डाल पर इतरा रहा है कैपिटलिस्ट।

(7) प्रेम के मुक्त तथा मांसल रूप का चित्रण :-
प्रगतिवादियों सहसा छायावाद के विरोध में सूक्ष्म एवं कल्पना-प्रसूत प्रेम के स्थान पर सर्वथा मुक्त तथा मांसल प्रेम का चित्रण किया। इस संदर्भ में नरेन्द्र शर्मा की ये पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं :—

आज विश्व से छीन तुम्हें प्रिय निज वक्षस्थल में लूंगी
मृदुल गोल गोरी बाँहों में, कंपित अंगों में कस लूँगी
फूलों के तन में कस लूंगी, आलि से - रैन निहारे बालम
आज न सोने दूँगी बालम।

प्रगतिवाद की कुछ कलागत प्रवृत्तियाँ भी हैं। सर्वप्रथम कवियों ने छायावादी कवियों द्वारा गृहीत भाषिक आभिजात्य को तोड़कर अपनी कविताओं में बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है। उन्होंने जन-जीवन से संबंधित और सहज बिम्बों को ग्रहण किया। अलंकारों को सहज रूप में अपनाया और प्रतीकों का चयन किया।

Scanned with CamScanner

यहाँ कुछ दृष्टान्त द्रष्टव्य हैं :-

बोलचाल की भाषा :

खैर पैर की जूती जीरुन नसही एक दूसरी आती
पर जवान बेटे की सुधि का साँप लोटते फटती छाती।

सहज बिम्ब :

सर से आँचर खिसका है धूल भरा जूड़ा ।
अध-खुला बदन, देती तुम सिर पर धर कूड़ा ।

सहज अलंकार :

सुन्दर है विहग, सुमन सुन्दर
मानव तुम सबसे सुन्दरतम
निर्मित सब की तिल सुषमा में तुम
निखिल सृष्टि में चिर-निरुपण ।

Scanned with CamScanner